तिब्बत में बौद्ध धर्म के आलोक में कला के प्रेरक तत्वों का ऐतिहासिक अनुशीलन

एस० के० जायसवाल*

संसार के सबसे ऊँचे भूभाग पर अवस्थित एवं भारत के निकटवर्ती देशों में एक तिब्बत अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के कारण एक उल्लेखनीय एवं अविस्मणीय योगदान के लिए विख्यात रहा है। इसके उत्तर में चीन, मंगोलिया, पूर्व में तुर्किस्तान और दक्षिण में भारत, बर्मा, नेपाल, सिक्कम और भूटान आदि देशों के अलावा रूस, अफगानिस्तान और पाकिस्तान भी तिब्बत के निकटवर्ती देश हैं। इन देशों और विशेष रूप से भारत के साथ तिब्बत के संबंध काफी प्राचीन काल से रहे हैं। भारत से चीन जाने का एक थलमार्ग तिब्बत से होकर जाता था और इसी मार्ग से व्यापार भी होता था। इसी के फलस्वरूप भारत की व्यापारिक वस्तुओं के साथ-साथ भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं धर्म तिब्बत में प्रसारित हुए।[1] छठी शताब्दी ईसवी के पश्चात तिब्बत और भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध काफी दृढ़ हो गयें। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्वीकार किया जाता है कि सातवी सदी ईसवी में वहाँ स्रोङ-चत्सन् स्गम पो[2] ने एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करने का गौरव प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप तिब्बती साम्राज्य की सीमा दक्षिण में हिमालय की तराई से उत्तर में थियानशान पर्वत माला तक विस्तृत हो गयी। इसके द्वारा विजित प्रदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार काफी तीव्र गति से हुआ। स्रोङ-चत्सन् स्गम पो ने चीनी एवं नेपाली राजकुमारियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और सौभाग्यवश दोनों ही धर्मनिष्ठ बौद्ध थीं और इनके प्रभाव के फलस्वरूप इस राजा ने भी बौद्ध धर्म

---

*प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

Scanned with CamScanner

अपना लिया।[3] तिब्बत में इसी समय बौद्ध धर्म राजधर्म बन गया। बौद्ध धर्म के लिए स्रोङ-बत्सन् स्गाम पो द्वारा किये गये कार्यों के कारण बाद के तिब्बती बौद्ध उसे बोधिसत्व अवलोकित का अवतार मानने लगे और उसकी नेपाली रानी को भृकुटि तथा चीनी रानी को तारा का अवतार समझा जाने लगा।[4] इस शासक के प्रयासों का ही परिणाम था कि एक मंत्री सम्भोट ने भारत में आकर तीस अक्षरों वाली जिस लिपि को तैयार किया उससे बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद कार्य प्रारम्भ हुआ और बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में काफी सहायता मिली।[5]

जिस तरह तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में भारत का उल्लेखनीय योगदान रहा, उसी प्रकार वहाँ की कला पर भी भारतीय प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ। वहाँ की कला स्पष्टयः बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है और भारतीय संस्कृति की उस पर अमिट छाप है। भारतीय कलाकारों विशेषकर धामिन और वितपाली[6] ने तिब्बती कला के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। इन दोनों की प्रेरणा से बुद्ध जी के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न घटनायें, जातक कथाओं आदि का बड़ा ही मार्मिक चित्रण वहाँ के कलाकारों ने अपनी कला में उतारा। तिब्बत के मठ-मन्दिर वहाँ की धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं। वहाँ की भाषा में मठों या विहारों को गोम्पा नाम से जाना जाता है। यह मठ वहाँ पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हैं। इन्हें भिक्षुओं के निवास हेतु निर्मित किया गया था। इनमें भगवान बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर एवं अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ एवं भित्तिचित्रों का अंकन मिलता है। इन मठों में समये, रे पुङ, सेरा एवं गाडेन मठ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।[7] समये मठ तिब्बत का पहला प्रमुख मठ है जिसे सातवीं शताब्दी में आचार्य शान्तिरक्षित ने निर्मित कराया था।

Scanned with CamScanner

यह मठ राजधानी ल्हासा के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बना है और इसका निर्माण उदन्तपुरी महाविहार के अनुकरण पर किया गया था। डे पुङ मठ का निर्माण जम्बभड ने 1416 ई0 में कराया था और इसका निर्माण धान्यकटक विश्वविद्यालय के अनुकरण पर किया गया था। इसमें लगभग 7700 भिक्षुओं के रहने की व्यवस्था थी और यह तिब्बत का सबसे बड़ा मठ माना जाता है। इसी प्रकार सेरा मठ का निर्माण 1419 ई0 में शाक्य येशे द्वारा कराया गया था जिसमें लगभग 5,500 भिक्षुओं के निवास की व्यवस्था है। जहाँ तक गाडेन मठ का प्रश्न है, इसका निर्माण छोङ खपा नामक भिक्षु ने 1405 ई0 में करवाया था जिसमें 3300 के लगभग भिक्षुओं के रहने की व्यवस्था थी। यह चारों मठ धर्म के साथ-साथ विद्याकेन्द्रों के रूप में भी चर्चित रहे हैं।

मठों की तरह तिब्बत में देव मन्दिर भी अपनी धार्मिक आस्था के लिए विख्यात रहे हैं।। इन मन्दिरों का निर्माण अधिकांशतः राजधानी ल्हासा में हुआ था। यहाँ शाक्य मुनि का एक भव्य मन्दिर है और इसमें कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जिसे मूर्तियों या चित्रों से न सजाया गया हो। इस मन्दिर में स्थापत्य, मूर्ति एवं चित्रकला का अनुपम संगम देखने को मिलता है। इसमें शाक्य मुनि बुद्ध की प्रतिमा 25 फुट ऊंची है और इसे स्वर्ण के मोटे पत्र से मढ़ा गया है। इसे तिब्बत की सम्पन्नता का भी प्रतीक कहा जा सकता है। तिब्बत का एक अन्य मन्दिर वुंस-यस् जिसका निर्माण ख्रि-स्रोण-इदे-व्सन (Kn-Sron-lde-btsan) ने 755-97 के मध्य निर्मित करवाया था। यह दुर्भाग्यवश कई बार अग्नि के प्रकोप से नष्ट हुआ पर प्राचीन स्रोतो के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यह ओदन्तपुरी के भारतीय मन्दिर पर आधारित था।[8] स्तूपों के निर्माण में भी भारतीय परम्परा को ही अपनाया गया।[9] भारतीय स्तूप तिब्बत में म्योद-र्तेन

Scanned with CamScanner

कहलाते थे। इसमें किसी पवित्र व्यक्ति की अस्थियों को रख दिया जाता था। बौद्ध साहित्य में भी स्तूप शब्द का प्रयोग मृतदेह के भस्मावशेषों के ऊपर निर्मित समाधि के अर्थ में हुआ है। निश्चित रूप से भारतीय स्तूपों की परम्परा ही तिब्बत में अपनायी गयी थी।

तिब्बत की बौद्ध कला के अन्तर्गत जिन बुद्धों की मूर्तियों का निर्माण हुआ उनमें दीपंकर, काश्यप, गौतम, मैत्रेय एवं भैषज्य बुद्ध हैं। इन पांच मानुषि बुद्धों ने अपने पूर्व जन्म में बोधिसत्व के रूप में ज्ञान अर्जित किया था। इन्हें भिक्षु वस्त्र में चित्रित किया गया है और आभूषण विहीन प्रदर्शित किया गया है। इनका दाहिना कन्धा या वक्षस्थल खुला रहता है। ध्यानी बुद्धों की श्रेणी में वैरोचन, अक्षोभ्य रत्न सम्भव, अमिताभ एवं अमोघसिद्धि को रखा गया है। पांच ध्यानी बुद्धों के साथ-साथ पांच ध्यानी बोधिसत्व भी हैं जो क्रमशः सामन्तभद्र, वज्रपाणि, अवलोकिनेश्वर और विश्वपाणि हैं। तिब्बत में जिन बोधिसत्वों को कला में विशेष स्थान मिला वे मैत्रेय, अवलोकितेश्वर और मंजुश्री हैं। इसके अलावा तिब्बती कला में तारा को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नेपाली तारा को एक महिला की तरह बैठे हुए प्रदर्शित किया गया है जिसके हाथ में एक कमल है। तारा देवियों की संख्या में वृद्धि होती गयी और उन्हें दया और करुणा का रूप स्वीकार कर लिया गया। बोधिसत्व के अलावा धर्मरक्षकों, लोकपालों और महापुरुषों को भी कला में स्थान मिला। यहाँ की कला पर निःसन्देह भारतीय बौद्ध कला की पारिपाटी को अपनाने का प्रयास किया गया। स्त्रियों के चित्रण में भारतीय सौन्दर्य स्पष्ट रूप से झलकता है। भारतीय आकृति और वेश-भूषा का भी स्पष्ट प्रभाव वहाँ की कला में देखने को मिलता है। मध्य युग में वहाँ की कला का तीव्र गति से विकास अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।

Scanned with CamScanner

जहाँ तक तिब्बती चित्रकला का प्रश्न है, इसका विषय भी पूर्ण रूप से धार्मिक ही रहा है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित बोधिसत्व और तांत्रिकों के चित्र वहाँ की चित्रकला के प्रमुख विषय रहे हैं। यह चित्र दीवारों (भित्तियों), कपड़ों और रेशम की लकड़ियों पर चित्रित किए जाते थे। दीवारों पर जो चित्र बनाये जाते थे उनको बनाने से पूर्व दीवार पर मिट्टी और भूसे का मिला हुआ मोटा प्लास्टर कर दिया जाता था और उसे काफी चिकना रूप देकर चित्र की रूपरेखा को खींचा जाता था। चित्रों को बनाने के बाद उसे विभिन्न रंगों से रंगा जाता था और उनमें चमक बनाये रखने के लिए तैलिक पदार्थों का लेपन किया जाता था। एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि चित्रों में जहाँ महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाओं का चित्रण किया गया है वहीं ग्रन्थों में भी चित्रों को स्थान दिया गया है। बौद्ध विहारों को भी अनेक चित्रों से अलंकृत किया गया था। बौद्ध भिक्षुओं के चित्रण में भारतीय वेश भूषा का स्पष्ट प्रभाव था।

तिब्बत के मन्दिरों में रेशमी कपड़ों पर भी बने चित्र टांगे जाते थे जिन्हें थंग-क कहा जाता था। इस तरह के चित्रों को बनाने के लिए एक मजबूत चिकने कपड़े को लेकर चाक और गोंद का उस पर लेपन किया जाता था। इसके पश्चात एक चिकने पत्थर को उस पर फेर देने के पश्चात् चित्रकार द्वारा उस पर रूपरेखा खींच दी जाती थी। इसी के साथ फूल-पत्ती, बादलों, पहाड़ों और उपासकों से पृष्ठभूमि को भरकर इसमें विभिन्न रंगों का चित्रण कर दिया जाता था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि बारहवीं शताब्दी में भारत और मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का लोप हो जाने के कारण तिब्बती कला ने अपना स्वतंत्र रूप धारण कर लिया और इसके विकास में चीनी कला का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होने लगा।[10] प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण, बादल, पहाड़ों और नदियों के साथ पुष्प एवं वृक्षों के

Scanned with CamScanner

चित्रों को धार्मिक चित्रों में स्थान देने के कारण तिब्बती कला पर चीनी कला का प्रभाव निश्चित रूप से था।

तिब्बत की चित्रकला को विद्वानों ने तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में वे चित्र आते हैं जिसकी मुख्य भूमिका भारतीय बौद्ध मूर्तियों पर आधारित है और उनकी सहायक रेखाओं के लिए चीनी कला शैली का अनुकरण किया गया है। द्वितीय वर्ग में वे चित्र हैं जिनकी मुख्य भूमिका चीनी कला पर आधारित है किन्तु रेखाओं के लिए भारतीय शैली का अनुकरण किया गया है। तृतीय वर्ग के अन्तर्गत उन चित्रों को रखा जा सकता है जो या तो प्रथम दोनों वर्गों के सम्मिश्रण से निर्मित किया गए हैं या फिर उनका दोनों से ही कोई सरोकार नहीं है और इन चित्रों को विशुद्ध तिब्बती चित्रों की संज्ञा दी जा सकती है।[11]

ऐसी मान्यता है कि तिब्बती चित्रकारों में सभी बौद्ध भिक्षु नहीं थे। लोगों का यह पैतृक व्यवसाय भी बन गया था। ऐसे चित्रकारों की गिनती साधारण वर्ग में होती थी। थंको पर जो चित्र निर्मित होते थे, उन चित्रों पर कहीं भी कलाकारों का नाम नहीं है। भित्त चित्रों में अवश्य ही कभी-कभी उनका नाम अंकित मिलता है। किसी भी देवता को शान्त रूप से चित्रित करने के लिए श्वेत वस्त्रों में प्रदर्शित किया गया है। क्रोध एवं वीभत्स रूप में उन्हें प्रदर्शित करने के लिए लाल एवं गहरे नीले रंग का प्रयोग किया जाता था। तंत्रवाद से सम्बन्धित स्त्री-पुरुष की मूर्तियां एवं तंत्र देवी-देवताओं की मूर्तियों के निर्माण में भी सरलता के दर्शन देखने को मिलते हैं। मन्दिरों में निर्मित

Scanned with CamScanner

कांसे या अष्ट धातु की मूर्तियां पाल शासकों के शासन काल के कलाकारों की देन कही जा सकती है।

तिब्बती कला की महत्वपूर्ण विशेषताओं को इस प्रकार देखा जा सकता है-

1. तिब्बती कला का प्रवाह मठ, मन्दिरों और विहारों के धार्मिक वातावरण में देखने को मिलता है जहाँ से यह कला प्रचलित हुई। भारत में विहार विश्वविद्यालयों की भाँति तिब्बत के मठ-मन्दिरों में अनेक विषयों की शिक्षा के साथ कला को भी एक विषय बनाकर इसे मुख्य भूमिका में रखने का यथासम्भव प्रयास किया गया। चित्रविद्या में तिब्बती लोगों ने काफी रुचि ली जिसका परिचय वहाँ के मठ-मन्दिरों और विहारों में दृष्टिगोचर हुआ।
2. तिब्बती कला में जहाँ एक ओर भारतीय प्रभाव है वहीं चीनी एवं ईरानी कला की भी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। पश्चिमी तिब्बत में जहाँ अजन्ता कला का प्रभाव है वहीं तम्बूर क्षेत्र में चीनी एवं ईरानी प्रभाव स्पष्टतया नजर आता है। कुछ चित्र ऐसे भी हैं जिन पर नेपाली चित्र शैली का भी प्रभाव है।
3. तिब्बती कला अलंकृत और सम्पन्न है। समस्त चित्रों में बुद्ध, बोधिसत्व एवं देवी-देवताओं का अंकन है। शैली में भारतीय प्रतिमा का प्रभाव है। पोशाकों एवं शिरोवस्त्र आदि भारतीय शैली पर आधारित दिखते हैं। चित्रों में लम्बी दाढ़ी वाली कलम पर निश्चित रूप से भारतीय प्रभाव है।

Scanned with CamScanner

4. मन्दिरों के चित्रों में कहीं-कहीं कलाकारों की शैर्षिक शैली के उल्लेख सामने आते हैं। उदाहरणार्थ ईयांग के मन्दिरों में कुछ कृतियाँ ली-लुग्स पद्धति और अन्य र्‌ग्य-लुग्स पद्धति से निर्मित थी। 'ली' का तात्पर्य खोतान से और 'रग्य' से चीन एवं 'रेग्य-गर' से भारत का संकेत मिलता हैं।

5. तिब्बती कलाकार मानवाकृति के चित्रण में भी काफी सिद्धहस्त थे। इसके उदाहरण काठमाण्डू के संग्रहालय में सुरक्षित धर्मगुरू लामाओं के चित्रों में देखे जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि तिब्बत का बौद्ध धर्म लामा मत के नाम से प्रसिद्ध हैं। लामा मत द्वारा समस्त बुद्धों और बोधिसत्वों को अपनाया गया। इसमें भारतीय बौद्ध धर्म के साथ-साथ स्थानीय कल्पों और राक्षसीय आत्माओं को भी स्थान मिला।

6. पटचित्रों को तैयार करने हेतु तिब्बती कला की विधि सर्वथा अलग दिखती है। यह पटचित्र देवी-देवताओं, धर्म, गुरुओं, तंत्र-मंत्रों और प्राकृतिक दृश्यों से सम्बद्ध होते थे। वहाँ पर 'बैनर पेंटिंग्स' का काफी प्रचलन था।

7. तिब्बत में बड़े 'थंग-कस' नामक चित्र गाढ़े कपड़े अथवा रेशम पर निर्मित किये जाते थे जिन्हें धार्मिक अवसरों अथवा संगीतियों में भी प्रदर्शित किया जाता था। ऐसे चित्रों को लपेटकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था।

8. चित्रों में भारतीय आचार्यों को प्रमुख रूप से स्थान मिला था। आचार्य शान्तिरक्षित, कमलशील, पद्मसम्भव, दीपंकर श्रीज्ञान अतीश आदि को चित्रों में प्रमुखता दी गयी थी। आचार्य पदमसम्भव तो तिब्बती कलाकारों में इतने लोकप्रिय थे कि तिब्बत में कोई ऐसा घर नहीं था जहाँ उनका

Scanned with CamScanner

भिन्न न रहा हो। इन आचार्यों ने तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया था।

इस तरह तिब्बत की कला मुख्य रूप से धार्मिक और बौद्ध धर्म से सम्बन्धित थी और भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत थी। यहाँ की चित्रकला आज भी प्राचीन परिपाटी के आधार पर अपने को जीवित रखे है। निःसंदेह यहाँ की कला अन्तर्राष्ट्रीय कला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ-

1. राजबली पाण्डेय, प्राचीन भारत, वाराणसी, 2010 पृ0494, ऐसी मान्यता है कि तिब्बत में सर्वप्रथम जिस राज्य की स्थापना हुई उसका शासक कौशल नरेश प्रसेनजित का पुत्र था। उसी की तीसरी पीढ़ी में राजा अंशु ने तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना की। वहाँ के प्राचीन मठ-मंदिर इस बात के ज्वलंत उदाहरण है कि वहाँ बौद्ध धर्म का प्रवेश काफी पहले हो चुका था। द्रष्टव्य वाचस्पति गैरोला, भारत के उत्तर पूर्वी सीमान्त देश, प्रयाग, 1968, पृष्ठ 17, 21

2. तिब्बत के प्रथम शासक का नाम ञ्यॉ-ट्री चेम्पो बताया जाता है। उस समय तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचलन था। अट्ठाइसवें राजा ल्हा-थो-री-ञ्येन के शासन काल में तिब्बत में बौद्ध धर्म पूर्णरूप से प्रतिष्ठित हो गया, तत्पश्चात् चार राजाओं के शासन काल में बौद्ध धर्म का विस्तार धीरे-धीरे होता गया और तैंतीसवें राजा स्रोङ-चन्-गम्-पो के शासन काल में बौद्ध धर्म का विकास काफी तीव्र गति से हुआ। द्रष्टव्य यमुना लाल, भारत और विदेशों में बौद्ध धर्म प्रचारक, दिल्ली 1993, पृष्ठ- 201-202

Scanned with CamScanner

3. द्रष्टव्य ए०के० नारायण (सम्पा०) स्टडीज इन हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म, दिल्ली, 2010, पृष्ठ 365-366 द्रष्टव्य आर०सी० मजूमदार, बेन्थ युग, दिल्ली, 1984, पृष्ठ 701। नेपाल की राजकुमारी भिकुटी जब तिब्बत गयी तो अपने साथ अक्षोभ्य मैत्रेय की चन्दन प्रतिमा तथा तारादेवी की मूर्तियाँ ले गयी थी। इसी तरह चीनी राजकन्या कोंज जो अपने साथ शाक्यमुनि बुद्ध की प्रतिमा ले गयी थी। यह प्रतिमा भारत से चीन गयी थी और इसे प्रसिद्ध भारतीय शिल्पी विश्वकर्मा ने बनाया था। नेपाल की कन्या जिन प्रतिमाओं को ले गयी थी, वे ल्हासा के ज्योखङ मठ में एवं चीनी राजकन्या द्वारा लाई गयी बुद्ध प्रतिमा ल्हासा के रिम्पोछे मंदिर में स्थापित की गयी थी और आज तक वहीं वर्तमान है। द्रष्टव्य वाचस्पति गैरोला, पूर्व निर्दिष्ट पृष्ठ-23

4. द्रष्टव्य स्टेफन बेयर (Stephan Beyer) दि कल्ट ऑफ तारा मैजिक एण्ड रिचुवल इन तिब्बत, कैलिफोर्नियाँ प्रेस, 1973, पृष्ठ-542

5. द्रष्टव्य आर०सी० मजूमदार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ 701, पी०एन० चोपड़ा, बी०एन० पुरी एवं एम०एन० दास, ए सोशल, कल्चरल एण्ड इकनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वाल्यूम-1, मद्रास, 1990, पृष्ठ 290

6. यह दोनो कलाकार पालवंशीय शासन धर्मपाल के शासन काल के थे।

7. द्रष्टव्य दामोदर सिंहल, एशिया में बौद्ध धर्म, मीनाक्षी प्रकाश नई दिल्ली, पृष्ठ-68-69

8. द्रष्टव्य बैजनाथ पुरी, मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति, लखनऊ 1981, पृष्ठ-289

9. वैदिक काल से ही भारत में समाधिरूप स्तूपों के निर्माण की परम्परा चल गयी थी। वैदिक इण्डेक्स, वाल्यूम 2, पृ० 483 इसी परम्परा से

Scanned with CamScanner

कालान्तर में स्तूपों का आविर्भाव हुआ था जिसका उद्देश्य बुद्ध तथा उनके प्रमुख अनुयायियों के अवशेषों को सुरक्षित रखना, बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को यादगार बनाने आदि के लिए होता था। गौतम बुद्ध के पूर्ववर्ती बुद्धों के लिए भी ऐसे स्तूपों का निर्माण किया गया। दृष्टव्य कृष्ण दत्त बाजपेयी, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, लखनऊ, 1990, पृष्ठ-62

10. दृष्टव्य बैजनाथ पुरी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ-291

11. दृष्टव्य दामोदर सिंहल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ-92

Scanned with CamScanner

Temples of Tibat

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Stupa:

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner